

कबीर वचनावली - सं. अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध

'कबीर वचनावली' नामक संपादित पुस्तक में 'मुखबंध' प्रथम खण्ड - दोहावली के अन्तर्गत कुल 65 उपशीर्षक हैं + जैसे- कर्ता निर्णय, शक्तिमत्ता, सर्वधट व्यापकता, शब्द, नाम, परिचय, अनुभव, सारग्राहिता, समदर्शिता, भक्ति, प्रेम, स्मरण, विश्वास आदि। इनमें से मात्र तीन उपशीर्षक का हमें अध्ययन करना है। पहला - 'नाम', दूसरा - 'परिचय' और तीसरा - 'प्रेम' है।

प्रत्येक उपशीर्षक के अन्तर्गत अनेक साखियों को संकलित किया गया है। इसमें 'नाम' के अन्तर्गत कुल साखियों की संख्या - 13 है, 'परिचय' के अन्तर्गत कुल साखियों की संख्या - 25 है तथा प्रेम उपशीर्षक के अन्तर्गत कुल - 30 साखियाँ संकलित हैं।

साखी से तात्पर्य कबीर द्वारा दिए गए उपदेश या कथन से है। 'साखी' शब्द अपभ्रंश भाषा का शब्द है जो संस्कृत भाषा के 'साक्षी' शब्द से रूपान्तरित होकर बना है। सन्तों द्वारा अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति ही 'साखी' है। साखियों में प्रायः दोहा छंद का प्रयोग किया गया है। दोहा के अलावा चौपाई, खोरठा, उपमान, मुक्तामणि, अवगा आदि छंदों का भी प्रयोग मिलता है। साखी का विभाजन अंगों में किया जाता है। साखियों के कुल तिरपन अंग हैं। कबीर ने 'अंग' शब्द का प्रयोग लक्षण के अर्थ में किया है। कबीर ग्रंथावली में 'अंग' शब्द विषय वस्तु के रूप में प्रयोग हुआ है।

कबीर की रचनाएँ मुख्यतः तीन काव्य रूपों में प्राप्त होती हैं - 'साखी', 'खबद' और 'रमैनी'।

'खबद' में शब्द ब्रह्म का भाव निहित होता है और उसे खंत संज्ञा के रूप में प्रयोग करते हैं। कबीर के 'खबद' पूर्णतया 'जेय' शैली में हैं, इसलिए उन्हें तरह-तरह से गाया जाता है।

रमैनी - कबीर बीजक में 'रमैनी' की व्युत्पत्ति 'रमणी' से मानी गई है। परशुराम चतुर्वेदी का कल्पा है कि 'रमैनी' का अर्थ संसार में जीवों का रमण या 'राम' के चिन्तन मनन या राम के वृत्त में रमण करना लगाया जा सकता है।

1. नाम

- (1) "आदि नाम पारस अहे मन है मैला लोह।
परसत ही कंचन भया दूटा बंधन मोह ॥35॥"

अर्थात् ईश्वर का नाम पारस पत्थर के समान है जो लोहे को स्पर्श करते ही उसे सोने में परिवर्तित कर देता है। विकार रूपी मैल से भरा मनुष्य का मन लोहे के समान है। पारस के स्पर्श से लोहा कंचन अर्थात् सोना हो जाता है उसी प्रकार परमात्म का नाम मनुष्य को मोह माया के बंधन से मुक्त कर देता है।